वन्दना

वन्दना मैं कर रही श्री राज की,
सच्चिदान्नदम् प्राणों के आधार की

1-क्षर अक्षर से प्यारा वो निजधाम है
अक्षर को भी सुध नही उस धाम की
वन्दना मैं कर रही

2-खेल झूठा देखने को आयी है,
आके भूली बातें जो थी धाम की
वन्दना मैं कर रही

3-आये पिया जी हमे जगाने धाम से
नींद में थी उनकी ना पहचान की
वन्दना मैं कर रही